महेश पब्लिक स्कूल, जोधपुर

कक्षा 9

पाठ : गिल्लू–

अतः वह बाद में एक एक चावल बड़ी कुशलता से उठाता था और बड़ी सफाई से खाता था।.....

जब गिल्लू के जीवन का प्रथम बंसत आया, तो उसे खिड़की से बाहर झाँकते देखकर लेखिका ने जाली का कोना खोल दिया। वह इस मार्ग से बाहर आने–जाने लगा। अस्वस्थता के कारण जब लेखिका को कुछ दिन बिस्तर में रहना पड़ा, तो वह अपने पंजों से उनके बालों को परिचारिका के समान सहलाता। लेखिका दोपहर में काम करती तो वह उनके पास रखी सुराही पर लेट जाता, जिससे वह उनके निकट भी रहता तथा गरमी से बचा भी रहता। अपनी जीवन–यात्रा के अंतिम दिनों में वह झूले से उतरकर उनके बिस्तर पर आ गया। उसने न तो कुछ खाया, न बाहर गया। अपने ठंडे पंजों से उसने लेखिका की उँगली पकड़ ली। उन्होंने हीटर जलाकर उसे गरमी दी, किंतु प्रभात की पहली किरण के साथ ही वह हमेशा के लिए सो गया। खिड़की की जाली भी अब बंद कर दी गई व उसे सोनजुही की लता के नीचे समाधि दे दी गई।

प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1 कौओं ने किसे घायल कर दिया था?

2 लेखिका ने गिलहरी का नाम क्या रखा?

3. भूख लगने पर गिल्लू किस तरह संकेत देता था?

4. गिल्लू को भूख लगने पर लेखिका उसे खाने के लिए क्या देती?

5. पाठ का नाम बताइए।